इकाई 3 संस्थागत दृष्टिकोण

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 संस्थागत दृष्टिकोण

3.2.1 संस्थागत दृष्टिकोण : एक ऐतिहासिक अवलोकन

3.2.2 संस्थागत दृष्टिकोण एवं तुलनात्मक सरकार का उद्भव

3.3 संस्थागत दृष्टिकोण : आलोचनात्मक मूल्यांकन

3.4 समकालीन तुलनात्मक अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण

3.5 सारांश

3.6 संदर्भ

3.7 संदर्भ

3.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम निम्न बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करेंगे–

क) क्या चीजें संस्थागत दृष्टिकोण निर्मित करती है।

ख) तुलनात्मक अध्ययन में इस दृष्टिकोण का महत्व

ग) तुलनात्मकता की इकाईयां

घ) विशिष्ट प्रश्न जिनका उत्तर यह दृष्टिकोण खोजता है या वे कौन से प्रश्न है जिनका उत्तर यह दृष्टिकोण दे सकता है ? और इसकी आकांक्षाएं एवं क्षमताएं क्या है ?

ङ) यह दृष्टिकोण अंतर और समानता को कैसे समझाता है। इस इकाई को समझने के बाद बाद आप निम्न करने में सक्षम होगें :–

- संस्थागत दृष्टिकोण को परिभाषित करें।
- इसकी तुलना के साधन बताएं।
- इस तरह की तुलना के द्वारा दिए जाने वाले उद्देश्यों की व्याख्या करें।
- इस दृष्टिकोण के सहूलियत के बिंदुओं की व्याख्या करें।
- इस दृष्टिकोण के महत्व और सीमाओं की व्याख्या करें।

3.1 परिचय

तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण के लिए संस्थागत दृष्टिकोण, सरल शब्दों में कहे तो संस्थानों का तुलनात्मक अध्ययन है। अध्ययन की प्रकृति (तुलनात्मक) और विषय वस्तु (संस्थान) इस प्रकार काफी स्पष्ट हैं। उदाहरण के लिए यदि किसी को संसदीय लोकतंत्रों में ऊपरी सदनों के सापेक्ष महत्व का अध्ययन

करना होता था, तो कई संसदीय लोकतंत्रों में ऊपरी सदनों के सापेक्ष महत्व का अध्ययन करना होगा (उदाहरण के लिए, भारत में राज्यसभा और यूनाइटेड किंगडम में हाउस ऑफ लॉर्डस) एवं प्रत्येक मामले में उनके सापेक्ष महत्व का आकलन होता है। तब कोई ऐसे संस्थानों के इस तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर, एक सामान्य निष्कर्ष पर पहुंच सकता है और उनकी प्रांसगिकता या संसदीय लोकतंत्रों में उपयोगिता के बारे में स्पष्टीकरण दे सकता है। उदाहरणार्थ, संसद के ऊपरी सदनों के गठन में प्रतिनिधित्व चरित्र का अभाव होता है, या ऊपरी सदनों का वंशानुगत चरित्र विधायिकाओं के लोकतांत्रिक चरित्र को मिटा देता है। उदाहरण के लिए, यूनाइटेड किंगडम में संसद के दोनों सदनों के विकास के संदर्भो (सामाजिक और आर्थिक) की परख कर सकते हैं कि हाउस ऑफ लॉर्डस ने वंशानुगत चरित्र को क्यों बनाए रखा। तत्पश्चात् एक अन्य संदर्भ को भी समझा जा सकता है, जिसमें वर्तमान दिशा उसके वंशानुगत चरित्र को समाप्त करने की पहल करती है। तब एक व्यक्ति उस संदर्भ को भी समझ सकता है जिसमें उसके वंशानुगत चरित्र को समाप्त करने की वर्तमान पहल सामने आई है। लंबे समय तक, तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण मुख्य रूप से संस्थानों के तुलनात्मक अध्ययन के साथ जुड़ा हुआ था। ऐतिहासिक रूप से, तुलनात्मक पद्धति का उपयोग पहली बार संस्थानों का अध्ययन करने के लिए किया गया था। संस्थानों के अध्ययन ने न केवल तुलनात्मक अध्ययन की शुरूआत को चिंहित किया, बल्कि यह उन्नीस सौ पचास के दशक तक तुलनात्मक राजनीति में कमोबेश प्रमुख दृष्टिकोण रहा। इस प्रकार, कोई यह प्रस्ताव कर सकता है कि पांरपरिक रूप से तुलनात्क राजनीतिक विश्लेषण संस्थानों और उन तरीकों के अध्ययन तक सीमित था, जो इन संस्थानों ने खुद को सत्ता के वितरण एवं सरकार की विभिन्न परतों और अंगो के बीच संबंधों में प्रकट किया था।

3.2 संस्थागत दृष्टिकोण

इस पर आमतौर पर सहमति है कि किसी समस्या के बारे में किसी भी दृष्टिकोण या जांच में निम्न चीजों से संबंधित कुछ विशेषताएं प्रदर्शित होती है– (क) विषय वस्तु (जिसका अध्ययन किया जा रहा है), (ख) शब्दावली (साधन या भाषा) और (ग) राजनीतिक परिपेक्ष्य की पसंद (जो सहूलियत बिंदु निर्धारित करता है और किस दिशा से एवं किस उद्देश्य से जांच का निर्देश दिया जाता है)। यदि इन तीनों के बारे में संस्थागत दृष्टिकोण की विशेषताओं के आधार पर विचार किया जाता है, तो इसे निम्न तरीके से इंगित किया जाता है –(अ) इसका सरोकार सरकार के संस्थानो और शक्ति के वितरण के अध्ययन से होता है अर्थात संविधान, सरकार कानूनी–औपचारिक संस्थाओं का अध्ययन, (ब) यह वृहत स्तर पर कानूनी और अक्सर कल्पनावादी और निदेशात्मक/आदर्शवादी शब्दावली होती है, अभी तक ऐतिहासिक रूप से इसमें 'आदर्श राज्य' और 'अच्छे आदेश' जैसे अमूर्त नियम एवं शर्ते होती है, (स) एक दार्शनिक, ऐतिहासिक या कानूनी परिपेक्ष्य।

इस दृष्टिकोण की एक विशेषता इसकी नृजातिकेंद्रीयता भी रही है। तुलनात्मक राजनीति में संस्थागत दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रमुख कार्य पश्चिमी देशों में केवल सरकारों और संस्थानों के साथ संबंधित है। अतः इस दृष्टिकोण

में निहित पश्चिमी उदारवादी लोकतांत्रिक संस्थानों की प्रधानता में विश्वास है। यह विश्वास न केवल पश्चिमी उदार लोकतंत्र को सरकार के सर्वोत्तम रूप की तरह देखता है, बल्कि यह इसे एक 'सार्वभौमिक' एवं 'मानक चरित्र' भी देता है। पश्चिमी उदार लोकतंत्र का सार्वभौमिक चरित्र मानता है कि सरकार का यह रूप न केवल सबसे अच्छा है, बल्कि यह सार्वभौमिक रूप से भी अनुकूल है। पश्चिमी उदारवाद लोकतांत्रिक देश के 'मानकीय' धारणा से चलता है। यदि यह शासन का सबसे अच्छा रूप है जो सार्वभौमिक रूप से लागू होता है, उदार लोकतंत्र सरकार का वह रूप है जिसे हर जगह अपनाया जाना चाहिए।

इस निर्धारित मानदंड अर्थात उदार लोकतंत्र ने हालांकि एक महत्वपूर्ण अपवाद की भी गुंजाइश दी। यह अपवाद उपनिवेशों के शासन की प्रथाओं और निहितार्थो में सामने आया :– (अ) कि उदार लोकतंत्र की संस्थाएं विशेष रूप से अपने मूल और संदर्भो में पश्चिमी थी और (ब) कि गैर–पश्चिमी देश लोकतांत्रिक देश लोकतांत्रिक स्वशासन के लिए तब तक दुरूस्त नहीं थे जब तक कि उन्हें पश्चिमी साम्राज्यवादी शासन के तहत प्रशिक्षित नहीं किया गया।

निम्नलिखित खंडो में, हम संस्थागत दृष्टिकोण की उत्पत्ति का प्राचीन काल से वतर्मान सदी की पहली तिमाही तक अध्ययन करेंगे जब यह तुलनात्मक अध्ययन की सुविधा हेतु एक प्रमुख दृष्टिकोण बन गया।

3.2.1 संस्थागत दृष्टिकोण : एक ऐतिहासिक अवलोकन

शायद सरकारों का सबसे पुराना तुलनात्मक अध्ययन अरस्तु द्वारा किया गया था, जिन्होंने ग्रीक शहर–राज्यों में संविधान और प्रथाओं का अध्ययन किया था। तथाकथित 'बर्बर' राज्यों की राजनीति का विरोध करते हुए, अरस्तु ने सरकारों को राजतंत्रों, कुलीनतंत्रों और लोकतंत्रों की श्रेणी में विभक्त किया और इनमें 'आदर्श' और 'विकृत' रूप की सरकारों की बीच भेदों के प्रकारो में बांटा। इस स्तर पर तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन को इस तथ्य से चिंहित किया गया था कि तथ्यों और मूल्यों के बीच एक अंतर्संबंध कहा जा सकता है। इसकी उत्पत्ति के इस चरण में, संस्थानों के एक अध्ययन ने सरकार के 'सिद्धांत और व्यवहार' का विश्लेषण करने का प्रयास नहीं किया। इसके बजाय 'आदर्श' राज्यों और सरकारों के रूपों की खोज करने की अत्यधिक इच्छा थीं। दूसरे शब्दों में, कल्पनाशीलता पर अधिक जोर दिया गया था, अर्थात 'क्या होना चाहिए' के प्रश्नों पर जोर दिया बजाय इसका स्पष्टीकरण के विश्लेषण करने कि क्या मौजूद है या जिसका अस्तित्व है।

ठारहवीं शताब्दी के मध्य में मैकियावेली (द प्रिंस) और मॉन्टेस्क्यू(द स्प्रिट ऑफ लाज्स) में मौजूदा मामलों के विषय में अनुभवजन्य विवरण और तथ्यों पर जोर दिया जाने लगा। हालांकि, मॉन्टेस्क्यू का मुख्य रूप से सवैधानिक वकीलों द्वारा अनुकरण किया गया था, जिनके व्यवसाय ने यह निर्धारित किया था कि वे सामग्री पर अधिक ध्यान केंद्रित करते है अर्थात सरकारों के सैद्धांतिक (कानूनी. –संवैधानिक) ढांचे पर अधिक जोर देते है बजाय इस पर कि ये ढांचे कैसे व्यवहार में आएं। कई मायनों में, टोकविले सरकारों के 'सिद्धांत और व्यवहार' के अध्ययन में पथप्रदर्शक थे, जो बाद के वर्षो में तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण का सार बन गया। (इकाई 2 में अमेरिकी और फ्रांसीसी लोकतंत्र के टोकविले के

अध्ययन का संदर्भ लें)। बागेहोट (अंग्रजी संविधान, 1867) ने ब्रिटीश कैबिनेट के अपने अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण के इस तत्व के विकास में एक और महत्वपूर्ण योगदान दिया, जो अमेरिकी कार्यपालिका के साथ तुलना के महत्वपूर्ण बिंदुओं को चित्रित करता है।

हांलाकि, यह ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोस्कीं थे, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी की अंतिम तिमाही में, संस्थानों के तुलनात्मक अध्ययन में और अध्ययन में एक अलग शाखा के रूप में तुलनात्मक सरकारों के विकास के आशय द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया।

3.2.2 संस्थागत दृष्टिकोण एवं तुलनात्मक सरकार का उभरना

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत और बीसवीं शताब्दी के आरंभ में ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोस्की के काम ने संस्थागत दृष्टिकोण की सामग्री को मौलिक रूप से परिवर्तित कर दिया तथा इस तरह तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति और दायरा बदल गया। उनके योगदान का आकलन करते हुए, जीन ब्लोंडेल जोर देकर कहा कि ब्रायस और लोवेल वास्तव में तुलनात्मक सरकार के सच्चे संस्थापक थे क्योंकि यह उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम तिमाही में अध्ययन की एक अलग शाखा के रूप में विकसित हुआ।

अमेरिकन कॉमनवेल्थ (1888) और मॉर्डन डेमोक्रेसी (1921) ब्रायस के दो महत्वपूर्ण कार्य थे। मार्डन डेमोक्रेसीज़ में, ब्रायस ने लोकतंत्र के सिद्धांत पर ध्यान केंद्रित किया और विधानसभाओं के काम और उनकी गिरावट की जांच की। लोवेल की रचनाएं गवर्नमेंट एंड पार्टीज़ इन कॉन्टिनेटल यूरोप (1896) और पब्लिक ओपिनियन एंड पॉपुलर गवर्नमेंट (1913) में जहां उन्होनें फ्रांस, जर्मनी, स्विटजरलैंड आदि का अलग–अलग अध्ययन किया और क्रमशः जनमत संग्रह एवं इसके प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन किया, जो समान रूप से महत्वपूर्ण थे। इसी तरह, ओस्ट्रोगोस्की का अध्ययन डेमोक्रेसी एंड द आर्गनाइजेशन ऑफ पोलिटिकल पार्टी (1902), जिसका उद्देश्य परिकल्पना का परीक्षण करना है, इसलिए राजनीतिक दलों के 'लोकतांत्रिक' या 'कुलीनवर्ग' का चरित्र उस समय का अग्रणी कार्य था। अब यह देखना महत्वपूर्ण है कि इन कार्यो में किस तरह वृद्धि हुई और उन तरीकों को कैसे परिवर्तित कर दिया गया, जिनसे अब तक अध्ययन किया जा रहा था।

1) सरकारों का सिद्धांत और व्यवहार : हमने पहले खंड में उल्लेख किया है कि सरकारों का तुलनात्मक अध्ययन दार्शनिक–कल्पनावादी या व्यापक रूप से कानूनी–संवैधानिक रहा, अर्थात वे या तो 'आदर्श राज्य' जैसी अमूर्त धारणाओं से या सरकारों के कानूनी, संवैधानिक ढ़ांचे और संरचनाओं के बारे में तथ्यों से चिंतित थे।

   उदार संवैधानिक सिद्धांत के आधार पर उन्होंने अपनी कानूनी शक्तियों और कार्यो पर जोर देने के साथ औपचारिक संस्थागत संरचनाओं का अध्ययन किया। उन्होंने अपने कार्य में 'तुलनात्मक सरकार' या 'विदेशी संविधानों' पर अध्ययन को हिस्सा बनाया। इन कार्यो को विभिन्न देशों में संस्थागत निर्माण में कुलीनों के प्रयासों के लिए प्रासंगिक देखा गया। यही कारण है कि नए स्वतंत्र देशों में संस्थागतवाद ने कुछ आकर्षण प्राप्त किया। हालांकि ब्रायस

एवं लॉवेल ने जोर दिया कि मौजूदा अध्ययन आंशिक एवं अपूर्ण थे। उनके अनुसार सरकारों का अधिक व्यापक अध्ययन होना चाहिए जिसमं सरकारों के कानूनी–संवैधानिक ढांचे के कार्यो को भी शामिल किया जाना चाहिए। उन्होंने इस तरह के अध्ययन में न केवल सरकारों के सैद्धांतिक आधारो या संदर्भो (यानी कानूनी–संवैधानिक ढांचे एवं सरकारी संस्थानों) के अध्ययन की आवश्यकता है, बल्कि 'सरकार के क्रियाकलापों' के अध्ययन पर समान जोर दिया गया। सिर्फ संविधान पर ध्यान देना, जैसा कि वकील करते है, यह अपर्याप्त था क्योंकि इससे उनके संचालन और कार्यान्वयन की समस्याओं की अनदेखी होगी। दूसरी ओर, अपने सैद्धांतिक (संविधानिक) ढांचे में आधार के बिना अभ्यास पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने से, फिर से यह एक अधूरा अध्ययन होगा, क्योंकि यह एक संदर्भ में दृष्टि खो सकता है जिसके अंतर्गत कार्यान्वयन की समस्याएं उभरती है। इस प्रकार, मुख्यतः ब्रायस और लोवेल के साथ तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में संस्थागत दृष्टिकोण की सामग्री को 'सरकार के सिद्धांत और व्यवहार' के अध्ययन के रूप में परिभाषित किया गया था।

2) 'तथ्यों पर ध्यान दें' :–इन अध्ययनों का एक महत्वपूर्ण घटक सरकारों के कामकाज बारे में 'तथ्यों' के विश्लेषण के माध्यम से 'अभ्यास' का अध्ययन करने की चिंता थी। अभ्यास का अध्ययन करने के लिए तथ्यों की खोज, एकत्र और यहां तक कि वृहत्तर संग्रह की जरूरत है। ब्रायस तथ्यों को किसी विश्लेषण को आधार बनाने की अपनी वकालत में दृढ थे, जिसके बिना उन्होंने कहा कि 'आंकडे केवल कल्पना है' : ''तथ्यों, तथ्यों, तथ्यों, जब तथ्यों की आपूर्ति की जाती है, तब हम में से प्रत्येक उनके साथ तर्क करने की कोशिश करता है''। हालांकि, एक प्रमुख कठिनाई सरकारों के व्यवहार के बारे में आंकडो का संग्रह करना था, क्योंकि इसका खुलासा करने के बजाय सरकारो द्वारा इसे छुपाने की फितरत रही। अतः तथ्य हासिल करना मुश्किल था क्योंकि सरकारे और राजनेता अक्सर तथ्यो को छिपाते थे या स्पष्ट करने के लिए तैयार नहीं थे कि वास्तविक वस्तुस्थिति क्या है। तथापि, इस कठिनाई ने उन्हें राजनीतिक जीवन, राजनीतिक दलों, कार्यपालिकाओं, जनमत संग्रह, विधानसभाओं इत्यादि के बारे में आंकड़े एकत्र करने के महत्व पर जोर देने नहीं रोक नहीं पाया। यह प्रयास बाद में हर्मन फिनर (थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ मॉर्डन गवर्नमेंट, 1932) और कार्ल फ्रेडरिक (कॉसंटूयशनल गवर्नमेंट एंड डेमोक्रेसी, 1932) जैसे तुलनावादियों द्वारा जारी रखा गया था।

3) तकनीकः तथ्यों की खोज ने मात्रात्मक संकेतकों के उपयोग हेतु ब्रायस और लोवेल ने नेतृत्व किया, जो इस एहसास पर आधारित था कि सरकार के अध्ययन में, गुणात्मक और मात्रात्मक प्रकार के साक्ष्य को संतुलित करना होगा। अतं में, हालांकि, ब्रायस और लॉवेल ने महसूस किया कि निष्कर्ष तभी दृढ़ हो सकते है जब वे यथासंभव विस्तृत तथ्यों पर आधारित हों। इसलिए उनके अध्ययन ने भौगोलिक रूप से कई देशों में विस्तार पाया, जो उस समय संवैधानिक या संनिकट–संवैधानिक चरित्र के संस्थान थे। अतः, उन्होंने यूरोप की सरकारों पर अपने अध्ययन को केंद्रित करने का प्रयास किया। हालांकि, ऑस्ट्रोगोर्स्की के काम के साथ तुलनात्मक राजनीतिक

विश्लेषण ने तुलनात्मक आधार पर विशिष्ट संस्थानों के अध्ययन पर ध्यान देना शुरू किया। 1902 में, ऑस्ट्रोगोस्र्की ने ब्रिटेन और अमेरिका में राजनीतिक दलों का एक विस्तृत अध्ययन प्रकाशित किया। बाद में, रॉबर्ट मिशेल (पोलैटिकल पार्टीस् ,1915) और मौरिस डूवरगर (पोलैटिकल पार्टीस् ,1950) द्वारा राजनीतिक दलों की भूमिका पर महत्वपूर्ण कार्य किए गए।

इसके बाद, 1950 के दशक में संस्थागत दृष्टिकोण की बडी आलोचनाएं डेविड ईस्टन और रॉय मैक्रिडिस जैसे 'प्रणाली सिद्धांतकारों के द्वारा की गई, जिन्होंने एक सामान्य/वैश्विक अनुप्रयोग वाले अतिव्यापी मॉडल के निर्माण पर जोर दिया। उन्होंने इन मॉडलों के आधार पर विभिन्न देशों में राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने और समझाने का प्रयास किया। इन आलोचनाओं और संस्थागत लोगों द्वारा प्रस्तुत किए गए बचाव के बारे में अगले भाग में चर्चा की जाएगी।

बोध प्रश्न 1

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर से अपने उत्तर की जांच करें।

1) तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण की व्याख्या करें।

.....

.....

.....

.....

.....

2) उन्नीसवीं सदीं के मोड़ पर संस्थागत दृष्टिकोण की विशेषताओं की जांच करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 संस्थागत दृष्टिकोण : आलोचनात्मक मूल्यांकन

यह दिलचस्प है कि तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण में संस्थागत दृष्टिकोण की आलोचनाएं बीसवीं शताब्दी के शुरूआती दौर में और फिर उन्नीस सौ पचास के दशक में निरंतर हुई। प्रत्येक आलोचना के बाद पुनः निखरे रूप में दृष्टिकोण का पुनरूत्थान हुआ है। इससे पहले कि संस्थानों के अध्ययन ने सदी के मोड़ पर एक तुलनात्मक चरित्र (हालांकि सीमित) हासिल कर लिया, दृष्टिकोण की आलोचना निम्नवत रूप से की गई :– (क) अटकलों के रूप में (ख) मोटे तौर पर निर्धारित और मानदण्ड सम्बंधी (ग) संबंधों को देखे बिना केवल अनियमितताओं और नियमितताओं पर केंद्रित रहा (घ) समावृत्ति और

गैर–तुलनात्मकता पर ध्यान केंद्रित किया जैसा कि उसने वैयक्तिक देशों पर किया था (ड.) जातीयता केंद्रित जैसा यह पश्चिमी यूरोपीय 'लोकतंत्रों' पर केंद्रित था (च) औपचारिक (संवैधानिक और सरकारी) संरचना पर ध्यान केंद्रित किया। जैसा इसने वर्णनात्मक (छ) विश्लेषणात्मक हुए बिना ऐतिहासिक (ज) इस ढांचे के अंतर्गत योगदानकर्ताओं को संस्थानों के अध्ययन के साथ इतना समाहित किया गया था कि सांस्कृतिक व्यवस्था और वैचारिक ढांचे में अंतर की तुलना करते हुए पूर्णतः अनदेखा कर दिया गया था, कहते है कि यूके और यूएसए के ऊपरी सदन, पद्धतिगत रूप से आंशिक/अपूर्ण और होने का आरोप लगाया जाता था और सैद्धांतिक रूप से यह कहा गया था कि वे राजनीतिक जीवन से चूक गए थे। हालांकि, हमने देखा कि ब्रायस और उनके समकालीनों के साथ संस्थागत दृष्टिकोण की प्रकृति और सामग्री में एक परिवर्तन आया, एक सीमित तरीके से एक तुलनात्मक चरित्र प्राप्त किया तथा सरकारों के व्यवहार के साथ सैद्धांतिक संदर्भो को संयोजित करने का प्रयास किया। उन्नीस सौ पचास में संस्थागत दृष्टिकोण ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोर्स्की वे विकसित हुआ, जिसकी फिर से डेविड ईस्टन और रॉय मैक्रिडिस जैसे राजनीतिक वैज्ञानिकों द्वारा आलोचना की जा रही थी। डेविड ईस्टन ने अपनी कृति 'पोलिटिकल सिस्टम' (1953) में ब्रायस के दृष्टिकोण के खिलाफ एक जोरदार हमला किया और इसे 'मात्र तथ्यवाद' कहा। कथित तौर पर ईस्टन के इस दृष्टिकोण से अमेरिकी राजनीति विज्ञान प्रभावित हुआ, जिसे उन्होंने 'अतितथ्यवाद' कहा था। यह स्वीकार करते हैं कि ब्रायस ने 'सिद्धांतों' की उपेक्षा नहीं की है। ब्रायस ने व्याख्यात्मक या सैद्धांतिक मॉडल निर्मित करने के लिए विरोध किया। इससे ईस्टन की दृढता से 'तथ्यो के अतिरेक' का विश्लेषण किया और इसके परिणामस्वरूप 'सैद्धांतिक कुपोषण' प्रेरित हुआ। (आप राजनीतिक घटना का अध्ययन करने के लिए ईस्टन के 'प्रणाली दृष्टिकोण' के आधार के रूप में 'प्रणाली निर्माण' के बारे में अगली इकाई में अध्ययन करेगें। इसलिए, यह समझना मुश्किल नहीं है कि ईस्टन को क्यों लगा कि ब्रायस का दृष्टिकोण अमेरिकी राजनीति विज्ञान को गलत रास्ते पर ले गया।) जीन ब्लोंडेल ने संस्थागत दृष्टिकोण की आलोचनाओं से रक्षा की। जब कि ईस्टन ने तथाकथित बताया 'तथ्यवाद' था। ब्लोंडल पहले तर्क देते है कि 'तथ्यों के प्रतिफल' का परिवर्तन गलत था क्योंकि व्यापक राजनीतिक विश्लेषण के लिए राजनीतिक वैज्ञानिकों के पास बहुत कम तथ्य उपलब्ध थे। वास्तविकता में, अधिकांश देशों के प्रमुख संस्थानों की संरचनाओं और गतिविधियों के बारे में बहुत कम जानकारी थी। विशेष रूप से, कम्युनिस्ट देशों और तथाकथित तीसरी दुनिया के देशों के बारे में। इस प्रकार अधिक तथ्यों को एकत्र करने की आवश्यकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। यह और अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि ज्यादातर सरकारें तथ्यों को प्रसारित करने के बजाय उन्हें छिपाने में लगी रहती है। दूसरे, एक वैश्विक या प्रणालीगत दृष्टिकोण के समर्थकों द्वारा संस्थानों और कानूनी व्यवस्थाओं के बारे में तथ्यों की उपयोगिता का अवमूल्यन हुआ, ब्लॉन्डेल का पूर्णतः 'गलत समझा' गया था। संस्थानों और कानूनी ढांचे के अर्न्तगत उन्होनें जो कार्य किया वह पूरे ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था, जिसमें एक राजनीतिक घटना का अध्ययन किया जा सकता था। पहले के बारे में तथ्यों को आंशिक अध्ययन से बचने हेतु राजनीतिक जीवन के अन्य पहलुओं के बारे में तथ्यों की तुलना करना पड़ता था। किसी भी मामलें में, तथ्य किसी

भी प्रभावी विश्लेषण के लिए आवश्यक थे। बिना 'तथ्य' या 'आंकडों' के कोई तर्क नहीं दे दिया जा सकता है। इस युग्मित बिन्दु के साथ कि तथ्यों को हासिल करना मुश्किल था, उन्हें राजनीतिक विश्लेषण के अध्ययन का अभिन्न अंग बना दिया गया। 1955 में रॉय मैक्रिडिस ने सरकार के तुलनात्मक अध्ययन में एक 'पुनर्विन्यास' की आवश्यकता पर ध्यान दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इसके मौजूदा रूप में तुलनात्मक अध्ययन केवल नाम में 'तुलनात्मक' है। मैक्रिडिस ने संस्थागत दृष्टिकोण के उन्मुखीकरण का वर्णन 'गैर–तुलनात्मक', 'पारलौकिक', 'स्थिर' और प्रबंधकीय के रूप में किया। कार्य का एक अच्छा अनुपात अधिक था, उन्होंने कहा 'अनिवार्य रूप से वर्णनात्मक'। ऐसा इसलिए था क्योंकि विश्लेषण ऐतिहासिक या कानूनी था और इसलिए 'बल्कि संकीर्ण' था। (मैक्रिडिस, द स्टडी ऑफ कम्परेटिव गवर्नमेंट, 1955)।

हालांकि, यह 1950 के दशक में महसूस किया गया था और यह चिंता बनी रही कि ऐसे तथ्यों की कमी बनी रही जिनसे वैध सामान्यीकरण किया जा सके। इस प्रकार ब्लोंडेल ने 'तथ्यो के आधिक्य' के बजाय 'मॉडल के आधिक्य' का दावा किया। ब्लोंडल ने इस बात पर जोर दिया कि तथ्यों के आधार पर मॉडल तैयार किए बिना गलत जानकारी दी जाएगी। यह गलत जानकारी, यह देखते हुए कि कुछ देशो के बारे में तथ्यों को जानना मुश्किल था, इसके प्रभावित होने की संभावना थी और कई बार इन देशों के बारे में पूर्व धारणाओ को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार, 1971 में लैटिन अमेरिका में विधायिकाओं के बारे में लिखते समय, डब्ल्यू एच अगोर ने टिप्पणी की कि दुनिया के उस हिस्से में विधायिकाओं पर जोर देने की प्रवृत्ति थी जहां वे बहुत कमजोर थी। इन जैसे कथनों से उन्होंने कहा कि वे 'अत्यंत प्रभावकारी साक्ष्य' पर आधारित थे, जो कि अध्ययन के लिए जानबूझकर एकत्र किए 'तथ्यों' के अभाव में थे। इस प्रकार संस्थागत दृष्टिकोण के अनुयायियों द्वारा तथ्यों को एकत्र करने के तरीकों का और विकसित करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया था। हालांकि, आलोचनाओं के बाद के कार्यो में तुलनात्मकता पर ध्यान केंद्रित किया गया था और इसमें गैर–पश्चिमी देशों को शामिल किया गया था। इसके अलावा, कानूनी. –संवैधानिक ढांचे द्वारा निर्धारित संरचनाओं की तुलना का अध्ययन करने को प्रयास किया गया था, उदाहरण के लिए जियोवानी सार्तोरी का 'पार्टी एंड पार्टी सिस्टम'(1976) पर कार्य, जिसमें एक सीमित तरीके से कम्यूनिस्ट देशों और तीसरी दुनिया के देशों को शामिल किया और 'फ्रांसीसी कैस्टल्स स्टडी ऑफ प्रेशर ग्रुपस एंड पोलिटिकल क्लचर' (1967) पर कार्य, जिसमें यूरोप, अमेरिका साथ ही उभरते हुए देशों के दबाव समूहों से कैसे निपटा जाए के बारे में अवगत कराना सम्मिलित था।

बोध प्रश्न 2

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) ईस्टन और मैक्रिडिस के अनुसार संस्थागत दृष्टिकोण की सीमाएं क्या है ?

.....

.....

2) संस्थागत दृष्टिकोण की रक्षा में ब्लोंडल एक प्रकरण को कैसे निर्मित करते है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 समसामयिक तुलनात्मक अध्ययन में संस्थागत दृष्टिकोण

1950 के दशक तक तुलनात्मक राजनीति में संस्थागतवाद दृष्टिकोण अलग था। लेकिन जैसे कि पिछले अनुभाग में चर्चा की गई है, संस्थागत दृष्टिकोण ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोस्की के कार्यो के साथ विशिष्ट हो गया।

हर्मन फिनर (आधुनिक सरकारों के सिद्धांत और व्यवहार, 1932) और कार्ल फ्रेडरिक (संवैधानिक सरकार और लोकतंत्र, 1932) द्वारा तुलनात्मक राजनीति में अग्रणी कार्य किया गया था। उदार संवैधानिक सिद्धांत के आधार पर, उन्होंने उनकी शक्तियों और कार्यो पर जोर देने के साथ औपचारिक संस्थागत संरचनाओं का अध्ययन किया। इन कार्यो ने 'तुलनात्मक सरकार' या 'विदेशी संविधानों' को अध्ययन का हिस्सा बनाया और विभिन्न देशों में संस्थाओं के सृजन में अभिजात वर्ग के प्रयासों के लिए प्रांसगिक माना गया। नए स्वतंत्र देशों में, संस्थागत दृष्टिकोण संस्थान सृजन पर जोर देता हुआ प्रतीत हुआ और इसने प्रमुखता हासिल कर ली। संस्थागत दृष्टिकोण का मुख्य केंद्र बिंदु (अर्थात इसकी विषय वस्तु) निम्नवत है :– (क) कानून और संविधान, (ख) सरकार और राज्य का ऐतिहासिक अध्ययन है, यह समझने के लिए कि संप्रभुता, अधिकार क्षेत्र, कानूनी और विधायी साधन अपने विभिन्न रूपों में कैसे विकसित हुए, (ग) सरकार की संरचनाएं कैसे कार्य करती है (सिद्धांत और व्यवहार), जिसमें सत्ता की शक्ति का वितरण शामिल है तथा ये कैसे स्वयं को राष्ट्र और राज्य, केंद्र और स्थानीय सरकार, प्रशासन और नौकरशाही, कानूनी और संवैधानिक प्रथाओं एवं सिद्धांतो के बीच संबंध में प्रकट करते है।संस्थागत दृष्टिकोण की एक अंतर्निहित धारणा लोकतंत्र के विशिष्ट पश्चिमी चरित्र में थी। इसका तात्पर्य है, जैसा कि पहले खंड में कहा गया था कि लोकतंत्र को न केवल अपने मूल में पश्चिमी चरित्र के रूप में देखा गया था, बल्कि इसको कहीं और लागू करने की कल्पना की गई थी एवं इसे केवल उसी रूप में निर्धारित किया गया था। इसने वृहत पैमाने पर पश्चिम–केंद्रित अध्ययन का नेतृत्व किया, अर्थात पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका के देशों पर संकेंद्रण रहा। ब्लोंडेल को लगता है कि 1950 के दशक में इस दृष्टिकोण के प्रभाव में गिरावट आई, इसकी वजह इसका 'गैर–पश्चिमी सरकारों', विशेष रूप से पूर्वी यूरोप के मुख्यतः कम्यूनिष्ट देशों और एशिया एवं लैटिन अमेरिका के नए स्वतंत्र देशों को जांच के दायरे में समायोजित करने में असमर्थता रही। इस प्रकार, एक दृष्टिकोण जो स्वयं पर इस बात पर गर्व करता था कि उसने सिद्धांत को व्यवहार से संबद्ध किया था, उसने खुद को उन तथ्यों का अध्ययन करने के लिए जांच के अपने ढांचे को संशोधित करने में असमर्थ पाया, जो उदार संवैधानिक लोकतंत्रो के

अनुरूप नहीं थे। 1950 के दशक में संस्थागत दृष्टिकोण में गिरावट कुछ हद तक पहले भी देखी गई थी, जो कि प्रणालीगत सिद्धांतकारों द्वारा सिद्धांतो के सृजन में तथ्यों से उत्पन्न निष्कर्ष के बजाए आगनात्मक सामान्यीकरण पर ध्यान दिया गया।

व्यवहारवादी क्रांति ने अध्ययन को राजनीतिक संस्थानों या सरकार के रूपों से व्यक्तियों एवं समूहों के राजनीतिक व्यवहार की ओर स्थानांतरित कर दिया। राजनीति विज्ञान में कई क्षेत्रों में व्यक्तिगत व्यवहार का अध्ययन एक विषय बन गया, दूसरी ओर तुलनात्मक राजनीति ने संस्थानो पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखा। उन्नीस सौ साठ और सत्तर के दशक में कुछ महत्वपूर्ण तुलनात्मक कार्य हुए राजनीतिक दलों (जैसे–सार्तोरीज़ की कृति पार्टीज़ एंड पार्टी सिस्टम,1976, बुडगे और एच.केमन की कृति पार्टीज़ एंड डेमोक्रेसी, 1990), दबाव समूहों (फ्रेंकल्स कास्टल्स की कृति प्रेशर ग्रुप्स एंड पॉलिटिकल कल्चर, 1967), न्यायपालिका (जी.शूबर्ट, ज्यूडिशियल बिहेवियर, 1964), विधायिका (एम.एल.मेजी, कम्परेटिव लेजिस्लेज़र, 1979, ए.कोर्नबर्ग, लेजिस्लेज़र इन कम्परेटिव प्रस्प्रेक्टिव, 1973, जे.बलोनडै 1, कम्परेटिव लेजिस्लेज़र 1973, डब्लू.एच.अगोर, लैटिन अमेरिकन लेजिस्लेज़र, 1971) और सैन्य (एस.ई.फीनर, मैन ऑन होर्सबैक,1962) पर हुए थे।

उन्नीस सौ अस्सी के दशक में, संस्थागत दृष्टिकोण उस रूप में फिर से विकसित हुआ जिसे 'नूतन संस्थावाद' कहा जाता है। सत्तर के दशक के उत्तरार्ध से संस्थानों हेतु सामाजिक वैज्ञानिकों के बीच रूचि बढ़ गई। कई लोगों के लिए, संस्थागत कारक इस बात की बेहतर व्याख्या करते प्रतीत हुए कि क्यों विभिन्न देश सामान्य आर्थिक चुनौतियों (जैसे तेल संकट) के लिए अलग–अलग प्रतिक्रियांए देते हैं। इसके अलावा, राजनीति विज्ञान के अध्ययन के विषय के अंतर्गत व्यवहारवाद में रूचि कम होने लगी थी। इन परिस्थितियों में, उनके मार्ग में महत्वपूर्ण कार्य हुआ :– 'द न्यू इंसटिट्यूशंलिज्म : ऑर्गेनाइजेशनल फैक्टरस् इन पॉलिटिकल लाइफ, मार्च एंड ऑलसेन (1984) ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को राजनीतिक संस्थानों अंतर्गत व्यक्तिगत राजनीतिक अभिनेताओं के व्यवहार को बेहतर ढ़ग से समझने के लिए संस्थागत विश्लेषण को पुनः परिभाषित करने के लिए कहा। इससे जो नूतन संस्थावाद उभर कर सामने आया, वह व्यक्तिगत राजनीतिक अभिनेताओ के कार्यो की जांच करने पर व्यवहारवादी विद्वानों के ध्यान के साथ औपचारिक संस्थागत नियमों और संरचनाओं के अध्ययन करने में पांरपरिक विद्वानो के हितो को जोड़ता है। नूतन संस्थावाद को इसलिए उत्तर. –व्यवहारवाद की पद्धति के रूप में देखा जा सकता है(जिसके बारे में हमने इकाई–1 में चर्चा की थी)।

नूतन संस्थावाद राजनीतिक विज्ञान में प्रमुख दृष्टिकोणों में से एक बन गया है, जिसका उपयोग तुलनात्मक राजनीति के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में कई विद्वानों द्वारा किया जाता है।

नूतन दृष्टिकोण पूर्व के संस्थागत दृष्टिकोण से इन बिंदुओ पर भिन्न है– (क) संस्थानों के अर्थ को व्यापक बनाने के लिए न केवल औपचारिक नियमों और संरचनाओं को शामिल किया, बल्कि राजनीतिक आचरण को आकार देने वाले अनौपचारिक प्रथाओं और गठबंधनों को भी शामिल किया। (ख) जिस तरह से

राजनीतिक संस्थाएं, मूल्यों और शक्ति संबंधों को मूर्त रूप देती है, इसका आलोचनात्मक मूल्यांकन किया, और (ग) पहले के दृष्टिकोण के नियतिवाद को अस्वीकार किया और संस्थाएं व्यक्तिगत आचरण में बाधा डाल सकती है इसे स्वीकार किया, वे भी मानव रचनाएं है जो अभिनेताओं की एजेसी के माध्यम से परिवर्तित और विकसित होती है।(लोन्डेस एंड रॉबर्टस्,2013, पृष्ठ 29)।

अमेरिका की राजनति का अध्ययन करने के लिए उक्त दृष्टिकोण का वृहत पैमाने पर उपयोग किया गया है (उदारणार्थ, वीवर एंड रॉकमैन द्वारा संपादित कृति 'डू इंस्टीट्यूशंस मैटर ? गवर्नमेंट कैपाबिलिटीस् इन द यूनाइटेड स्टेट्स एंड अब्राड्,' 1993)।

इसका उपयोग विभिन्न सार्वजनिक नीतियों जैसे स्वास्थ्य, कल्याणकारी और औद्योगिक विकास के अध्ययन के लिए भी किया गया है,(स्टाइमो, थेलेन एंड लॉन्गस्ट्रेथ, स्ट्रक्चरिंग पॉलिटिक्सः हिस्टोरिक्ल इंस्टीट्यूशनलिज्म इन कम्परेटिव एनालिसिस)। कुछ ने इस दृष्टिकोण का अधिकांशतः सामान्य तरीके से उपयोग अर्थव्यवस्था में सरकारी संस्थानों की भूमिका का अध्ययन करने के लिए किया है (अवलोकन करें, जैसे हॉल, 1986)। अन्य लोगों ने राज्य क्षमता की कई महत्वपूर्ण संस्थागत आधारो पर ध्यान केंद्रित किया है (वीस,एल 1988), द मिथ ऑफ द पॉवरलेस स्टेट एंड इवांस, पृष्ठ 1995, इम्बेडेड आटोनॉमी : स्टेटस् एंड इंडस्ट्रीयल ट्रांसफारमेशन)।

हालांकि, कई अध्ययनों में नूतन दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है, लेकिन नूतन संस्थावाद के गठन की कोई सटीक परिभाषा नहीं है। ऐसा इसलिए है क्योंकि नूतन संस्थावाद एक छतरी की तरह है जिसमें विभिन्न प्रकार की धाराएं शामिल है (नीचे का बॉक्स देखें)। हालांकि, तीन धाराएं– मानकीय संस्थावाद, तर्कसंगम विकल्पवादी संस्थावाद और ऐतिहासिक संस्थावाद, तुलनात्मक राजनीति में लोकप्रिय हैं, कुछ विद्वान कई धाराओं से विचारों और अवधारणाओं को उद्धृत करते हैं। एक बात जो उन सभी को एकजुट करती है, वह है कि ''वे संस्थानों को गंभीरता से लेते है क्योंकि उन्हें लगता है कि राजनीतिक संस्थागत लोग व्यक्तिगत राजनीतिक अभिनेताओं की रूचियों में अवरोध उत्पन्न करते है।''(मिलर, 2011, पृष्ठ 24)।

नूतन संस्थावाद के विभिन्न पहलू

- मानकीय संस्थागत विशेषज्ञ अध्ययन करते है कि कैसे राजनीतिक संस्थानों में निहित मानदंड और मूल्य व्यक्तियों के व्यवहार को आकार देते हैं।
- तर्कसंगत विकल्पवादी संस्थागतवादियों का तर्क है कि राजनीतिक संस्थान नियमों और प्रलोभनों की प्रणाली है जिनके अंतर्गत व्यक्ति अपनी उपयोगिताओं को अधिकतम करने का प्रयास करते है।
- ऐतिहासिक संस्थागत विशेषज्ञ इस बात का अवलोकन करते है कि सरकारी प्रणालियों के संस्थागत डिजाइन के बारे में विकल्प लोगों के भविष्य के लिए निर्णय लेने को कैसे प्रभावित करते हैं।

- अनुभवजन्य संस्थागतवादी, जो सबसे अधिक 'पारंपरिक' दृष्टिकोण से मिलते–जुलते है, विभिन्न संस्थागत प्रकारों को वर्गीकृत करते है और सरकारी प्रदर्शन पर उनके व्यावहारिक प्रभावों का विश्लेषण करते है।
- अंतर्राष्ट्रीय संस्थागत विशेषज्ञ बताते है कि राज्यों का व्यवहार अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक जीवन की संरचनात्मक बाधाओं (औपचारिक और अनौपचारिक) द्वारा संचालित होते है।
- समाजशास्त्रीय संस्थागत विशेषज्ञ उस तरीके का अध्ययन करते है जिसमें संस्थान व्यक्तियों के लिए प्रयोजन का सृजन करते है, एवं राजनीति विज्ञान के अंतर्गत मानकीय संस्थागतवाद हेतु महत्वपूर्ण सैद्धांतिक भवन खंड प्रदान करते है।
- नेटवर्क संबंधी संस्थावादी बताते है कि व्यक्तियों और समूहों के बीच बातचीत के स्वरूप कैसे नियमित लेकिन अक्सर अनौपचारिक होते है एवं ये उनके राजनीतिक व्यवहार को आकार देते है।
- रचनात्मक या तार्किक संस्थावादी, संस्थानों को प्रयोजन के ढ़ांचे के माध्यम से व्यवहार को आकार देने के रूप में देखते है। संस्थानों के प्रयोजन के ढ़ांचे से तात्पर्य है कि राजनीतिक कार्रवाई को समझाने, विचार करने या वैध ठहराने के लिए उपयोग किए जाने वाले विचार और कथन। उत्तर–संरचनात्मक संस्थागतवादी इस बात पर बहस करते हुए आगे जाकर कहते है कि संस्थान वास्तव में राजनीतिक व्यक्तिपरकता और पहचान का सृजन करते है।
- नारी अधिकारो से संबंधित संस्थावादी यह अध्ययन करते है कि संस्थानों के अंतर्गत लिंग मानदंड कैसे संचालित होते है और संस्थागत प्रक्रियाएं लिंग शक्ति गतिविद्या का सृजन और अनुरक्षण कैसे करती हैं।

(विवियन लोन्डेस् और मार्क रॉबर्ट्स, 2013, पृष्ठ 34)

बोध प्रश्न 3

नोटः क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का उपयोग करें।

ख) इकाई के अंत में दिए गए उत्तर के साथ अपने उत्तर की जांच करें।

1) व्यवहारवादी और संस्थागतवादी विद्वानों के बीच अंतर का पाटने के लिए नूतन संस्थावाद ने क्या किया ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 सारांश

संस्थागत दृष्टिकोण अपने विभिन्न रूपों में तुलनात्मक राजनीतिक विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण घटक रहा है। शासन के संस्थानों का अध्ययन राजनीतिक विश्लेषण के मूल में था, यह प्लेटो के 'रिपब्लिक' के आदर्श राज्य या अरस्तू की 'पालिटिक्स' में उनके द्वारा प्रस्तावित राज्यों की प्रणालियों की खोज में दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन और प्रारंभिक रूपों में, संस्थागत दृष्टिकोण अधिक दार्शनिक और कल्पनावादी था, जो आदर्श विशिष्ट राज्यों के संबंधित था एवं आदर्श शासन के मानदंडो का निर्धारन करता था। मोंटेस्क्यू और उनके उत्तराधिकारियों के साथ, कानूनी–संवैधानिक ढ़ांचे या लोकतंत्रों की संरचनाओं के साथ दृष्टिकोण की पूर्वसंलग्नता से उसका प्रसार हो गया। हालांकि, उदार संवैधानिक लोकतंत्रों के सस्थानों में विश्वास ने शासन के कार्य करने के तरीके का अध्ययन नहीं किया। प्रायः, कम से कम उन्नीसवी सदी के अंत तक कानूनी. –संवैधानिक संरचनाओं की पेचीदगियों या शासन के सैद्धांतिक ढ़ांचे ने राजनीतिक वैज्ञानिकों और कानूनी विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित करना जारी रखा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि उक्त दृष्टिकोण को सरकार के गठन और कानूनी–औपचारिक संस्थानों एवं उदार लोकतंत्र के मानकीय मूल्यों के साथ एक पूर्वसंलग्नता से चित्रित किया गया है। इस दृष्टिकोण को पूर्ववर्ती उपनिवेशों में यूरोपीय उदारवादी मूल्यों को लोकप्रिय बनाने के लिए औपनिवेशिक शासन द्वारा भी प्रचारित किया गया था। विभिन्न देशों में संस्थाओं के सृजन में अभिजात वर्ग के प्रयासों के लिए संस्थावादियों के कार्य भी अत्यंत प्रांसगिक थे।

हालांकि, केवल उन्नीसवीं सदी के अंत और बीसवीं सदी के शुरूआत तक में ब्रायस, लोवेल और ओस्ट्रोगोस्की जैसे विद्वानों ने संस्थानों के अध्ययन में नए आयाम निम्नवत दिए।

(क) सैद्धांतिक–कानूनी–संवैधानिक ढ़ांचे के अध्ययन को उनके कामकाज के बारे में तथ्यों के साथ जोड़कर और (ख) अन्य देशों में भी संस्थानों के अध्ययन के कार्य को सम्मिलित करके तुलनात्मक आधार दिया। इस प्रकार, कहा जा सकता है कि यह दृष्टिकोण बीसवीं सदीं की पहली तिमाही तक एक सीमित तुलनात्मक चरित्र और कठोरता हासिल किए रहा। हालांकि, उन्नीस सौ पचास के दशक में इस दृष्टिकोण पर ईस्टन और मैक्रिडिस जैसे प्रणालीवादी सिद्धांतकारों ने आक्षेप किए और बाद में निम्नवत आलोचना की–

(क) तथ्यों पर अत्यधिक जोर, (ख) सैद्धांतिक सूत्रीकरण का अभाव, यदि ऐसा न होता तो उसे आमतौर पर अन्य देशों के संस्थानों में लागू किया जा सकता था। और (ग) तुलनात्मक चरित्र का अभाव।

इन सिद्धांतकारों ने अपनी ओर से 'समग्र' या 'वैश्विक' माड्ल या प्रणाली का सृजन करने को प्राथमिकता दी, जिससे दुनिया भर के देशों में संस्थानों के कामकाज की व्याख्या कर सकें। संस्थागत दृष्टिकोण के पेशेवरों के विरूद्ध एक महत्वपूर्ण आलोचना यह है कि ये 'पश्चिम केंद्रित' दृष्टिकोण है अर्थात तीसरी दुनिया और पूर्वी यूरोप के कम्यूनिस्ट देशों के संस्थानों के अध्ययन में वे विफल रहे। इन देशों का अध्ययन करने में विफलता ने इस दृष्टिकोण के मानकीय ढ़ांचे को प्रभाव में लाया, जो पश्चिमी उदारवादी–संवैधानिक लोकतंत्रों के केवल

सैद्धांतिक प्रतिमानों को समायोजित कर सकता था। विकासशील और साम्यवादी दुनिया के अन्य देशों में संस्थानों को समझने के लिए साधन की कमी के परिणामस्वरूप इस दृष्टिकोण के प्रभाव का एक अस्थायी विनाश हुआ। हालांकि, यह उन्नीस सौ अस्सी के दशक में, एक ऐसे रूप में पुनः प्रस्फुटित हुआ, जिसनें तथ्यों पर अपना जोर बरकरार रखते हुए, सामान्यकृत सैद्धांतिक बयान देने से पीछे नहीं हटा।

नूतन संस्थावाद यह समझने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करता है कि एक राजनीतिक संस्थान के अंतर्गत मानदंड, नियम, संस्कृतियां एवं संरचनाएं कैसे व्यक्तियों को बाधित और प्रभावित करती है।

3.6 संदर्भ

एप्टर, डेविड ई.(1996). 'कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स, ओल्ड एंड न्यू' इन रॉबर्ट ई. गूडिन एंड हैंस क्लिंगमैन, एडस्ए न्यू हैंडबुक ऑफ पालिटिकल साइंस, ऑक्सफोर्ड, ऑक्सफोड युनिवर्सिटि प्रेस।

ब्लोंडल, जीन.(1999). 'दएन एंड नाओः कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स'. पॉलिटिकल स्टडीज़. वोल्यूम.XLVII, पेज 152–160।

————————————. (1981). दी डिसिप्लिन ऑफ पॉलिटिक्स, बटरवर्थस्, लंदन, बटरवर्थस्।

क्वेलबल, टी.ए. (1995). ' दी न्यू इन्स्टिट्यूशनलिज़म् इन पॉलिटिकल साइंस एंड सोशिओलोजी', कम्पेरेटिव पॉलिटिक्स, 27, पेज. 221–244।

मिलर सी मार्क. (2011). 'नीओ– इन्स्टिट्यूशनलिज़म्' इन जॉन टी इशियामा एंड म्रिजक ब्रेउनिंग, एड. 21 सेंचुरी पॉलिटिकल साइंस – ए रैफ्रेंस हैंडबुक. कैलिफोर्निया सेज पब्लिकेशनस्।

रौथस्टिन, बी. (1996). 'पॉलिटिकल इन्स्टिट्यूशनस्ः एन ओवरव्यू' इन आर.गुडिन एंड के.हैंस–डाइटर. (एडस्). ' न्यू हैंडबुक ऑफ पालिटिकल साइंस. ऑक्सफोर्ड, आक्सफोर्ड युनिवर्सिटि प्रेस।

विवियन लौंडिस् एंड मार्क रॉबर्टस्. (2013) वाए इंस्टिट्यूशनस् मैटर – दी न्यू इन्स्टिट्यूशनलिज़म इन पॉलिटिकल साइंस. लंदन, पॉलग्रेव मैकमिलन।

विरदा, जे होवर्ड. (1985). न्यू डायरेक्शनस् इन कम्पैरेटिव पॉलिटिक्स्, बोल्डर, वेस्टव्यू प्रेस।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) दृष्टिकोण एक दूसरे की तुलना में विभिन्न संस्थानों के अध्ययन पर आधारित है। यह समान संस्थानों जैसे कार्यकारी, विधायिका आदि की संरचना और कार्यों में समानता और अंतर की तुलना करता है और निष्कर्ष निकालने की कोशिश करता है।

2) समान संस्थानों की तुलनाः उनकी उत्पत्ति, विकास और काम करने का संदर्भ; निष्कर्ष निकालना; निष्कर्ष के आधार पर परिवर्तन या सुधार के लिए सुझाव देना।

बोध प्रश्न 2

1) खंड 3.3 देखें।

2) ब्लोंड ने संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण की सीमाओं को इंगित किया और अभी तक भी संस्थानों के बारे में पर्याप्त जानकारी का आभाव है। उन्होंने संस्थानों और कानूनी ढ़ांचे के महत्व पर भी जोर दिया।

बोध प्रश्न 3

1) नए संस्थात्मक संस्थान उसमें अंतर्निहित व्यक्तिगत व्यवहारों का अध्ययन करना चाहते हैं, इस प्रकार पारंपरिक और व्यवहारिक दृष्टिकोणों के बीच अंतर को कम करता है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY